साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 46, अक्टूबर(प्रथम) , 2018

प्रेमचंद का प्रथम उपन्यासः
असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य

पवनेश ठकुराठी 'पवन'

कथाकार मुंशी प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य' नामक उपन्यास से प्रारंभ होती है। प्रेमचंद का यह उपन्यास प्रथम बार वर्ष 1903 से वर्ष 1905 तक बनारस के साप्ताहिक उर्दू पत्र 'आवाज-ए-खल्क' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास उनके चार प्रारंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचरण' में संकलित है। 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य' उपन्यास मूलतः उर्दू में लिखा गया है। इस उपन्यास के अलावा उनके मंगलाचरण में संकलित तीन अन्य उपन्यासों हमखुर्मा व हमसवाब, प्रेमा और रूठी रानी में से हमखुर्मा व हमसवाब तथा रूठी रानी भी मूलतः उर्दू में ही लिखे गए थे। 'प्रेमा' उपन्यास तो वस्तुतः हमखुर्मा व हमसवाब का ही हिंदी रूपांतर है।

'असरारे मआबिद' और 'हमखुर्मा व हमसवाब' उपन्यासों के बाद प्रेमचंद के क्रमशः किशना (1907 ई0), रूठी रानी (1907 ई0), वरदान (1912 ई0), सेवासदन (1918 ई0), प्रेमाश्रम (1921 ई0), रंगभूमि (1925 ई0), कायाकल्प (1926 ई0), निर्मला (1925-1926 ई0), प्रतिज्ञा (1927 ई0), गबन (1931 ई0), कर्मभूमि (1932 ई0), गोदान (1936 ई0), और मंगलसूत्र (1948 ई0) उपन्यास प्रकाशित हुए। इस प्रकार प्रेमचंद ने कुल 15 उपन्यास लिखे। इन उपन्यासों में 'किशना' एक ऐसा उपन्यास है, जो अभी तक अनुपलब्ध है। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अपूर्ण उपन्यास है, जो उनकी मृत्यु के ग्यारह वर्षों के पश्चात् 1948 में प्रकाशित हुआ।

असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य प्रेमचंद के चार प्रारंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचरण' का प्रथम उपन्यास है। साथ ही यह प्रेमचंद की अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं में सबसे पुरानी रचना है। यही प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास भी है। प्रेमचंद के इस लघु उपन्यास का प्रकाशन बनारस के साप्ताहिक उर्दू पत्र 'आवाज-ए-खल्क' में 8 अक्टूबर, 1903 से 1 फरवरी 1905 तक धारावाहिक रूप में 'मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी' नाम से हुआ था। यह उर्दू में लिखित उपन्यास है, जो संभवतः कभी पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हुआ। इसे महज संयोग ही कहा जाना चाहिए कि अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' के समान ही उनका यह प्रथम उपन्यास भी अधूरा ही रहा। उर्दू पत्र 'आवाज-ए-खल्क' का 1 सितंबर, 1904 का अंक न मिल पाने के कारण इस उपन्यास का उस अंक में प्रकाशित उपन्यास अंश प्राप्त नहीं हो पाया है। यही कारण है कि 'मंगलाचरण' में इस अंक के अंश के अतिरिक्त शेष सभी अंश प्रकाशित किए गए हैं। डा0 कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद के पत्रों के आधार पर इस उपन्यास का रचनाकाल सन् 1900 के आसपास माना है।

'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य' के 'मंगलाचरण' में कुल 5 परिच्छेद संकलित हैं। वस्तुतः यह उपन्यास मंदिर के पुजारियों और महंतों की दुराचारी प्रवृत्ति को उजागर करता है। उपन्यास में श्री महादेव लिंगेश्वरनाथ के मंदिर को कथा का केंद्र बिंदु बनाया गया है। स्वामी और त्रिलोकी जैसे चरित्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने धर्म के धंधेबाजों की विलासिता और कामुकता का यथार्थ चित्रण किया हैः ''आखिरकार शराब ने सबके होश-हवास को मार भगाया और इन बेवकूफ पीने वालों को खूब तिगनी का नाच नचाया। जब सरूर ज्यादा हुआ तो स्वामी जी ने उस सुंदरी का हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में खींचा। त्रिलोकीनाथ भी चुपके से बढ़ आए।'' इस उपन्यास की विवाहित नारी चरित्र रामकली पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित दिखती है। सरस्वती (छोकरी) एक वेश्या है, जो पुजारी और महंत का मनोरंजन करती हुई दिखाई गई है। दूसरे परिच्छेद में शिवजी के मुख से भांग की महिमा का वर्णन हास्यपूर्ण बन पड़ा हैः

''भंग बानिए फक्र इरफाँ है, भंग हामिए इश्के यजदाँ है।
भंग साहबदिलों का तोहफा है, भंग ही मुकाविलों का हदिया है.....।''

चूंकि युवावस्था में अत्यधिक कहकहे लगाकर हँसने की प्रवृत्ति के कारण प्रेमचंद को उनके मित्र 'बम्बूक' कहा करते थे। उनके इस नाम का प्रयोग इस उपन्यास में दो बार हुआ है, एक जुमेराती के कथन में, दूसरा भगेलू केः

1.यार तुम तो निरे बम्बूक ही निकले।

2.देखो तो इस बम्बूक को कैसा चकमा देता हूं कि वह भी याद करेगा कि किसी ने हत्थे पर चढ़ाया था।

कुल मिलाकर प्रेमचंद ने अपने इस उपन्यास में बाबाओं के छल-प्रपंच, धार्मिक-पाखंड, व्यभिचार एवं उनके चारित्रिक पतन का यथार्थ और प्रभावी चित्रण किया है। डा0 कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में: ''धार्मिक कट्टरता के उस युग में धर्म-स्थानों और धर्म के ठेकेदारों के कलुषमय जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में उपन्यासकार के साहस की प्रशंसा करनी पडेगी। यह प्रेमचंद की सामाजिक चेतना ही है, जो धर्म के नाम पर होने वाले भ्रष्टाचारों के निवारण का साहस कर सकी है। प्रेमचंद ने अपने इस उपन्यास में महंतों के अधार्मिक-कृत्यों, भोग-विलासमय जीवन, ईश्वर-भक्ति के लिए आई अनजान और भोली स्त्रियों को वासना का साधन बनाने, वेश्याओं का मंदिर में नाच, शराब-कबाब से युक्त जीवन, स्त्रियों के जेवर कपड़े हथियाने के कुचक्र आदि का चित्रण करके यह सिद्ध कर दिया है कि देवस्थान मंदिर अब देवताओं के निवास-स्थल न रहकर 'ऐय्यास, जालिम और बेईमान' महंतों-पुजारियों के भोग-विलास के अड्डे बन गए हैं।''

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें